Anecdots From The History Of Modern Computing

— V. Rajaraman

प्रस्तुत पुस्तक 72 कथाओं की शृंखला के माध्यम से आधुनिक कम्प्यूटिंग के इतिहास का स्मृति रूप है। आधुनिक कम्प्यूटिंग का आरम्भ पेन्सिलवेनिया विश्वविद्यालय के इंजीनियरों द्वारा वर्ष 1946 में आधुनिक संगृहीत प्रोग्राम कम्प्यूटर ENIAC के निर्माण से होता है एवं परिसमाप्ति चैटजीपीटी (Chat GPT), जेमिनी और अन्य बड़े भाषा मॉडल–आधारित जनरेटिव एआई (AI) सहायकों की कथाओं से होती है, जो वर्ष 2023 में प्रकाश में आए हैं। यह आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस पूछे गए प्रश्नों के उसी भाषा में सहजता से उत्तर देने से लेकर निबन्ध, कविता और कम्प्यूटर प्रोग्राम की रचना करने में भी समर्थ है। इस पुस्तक में 1200 से 2500 शब्दों के मध्य लिखित लघु कथाओं का संकलन है। प्रत्येक कथा आधुनिक कम्प्यूटिंग के विकास से सम्बन्धित किसी महत्त्वपूर्ण आविष्कार तथा इस क्षेत्र के नवाचारी व्यक्तियों से सम्बद्ध पक्षों का उद्घाटन भी करती है। इन कथाओं के माध्यम से कम्प्यूटर हार्डवेयर, सॉफ्टवेयर, एप्लिकेशन, कम्प्यूटर सञ्चार और कृत्रिम बुद्धिमत्ता के इतिहास को प्रतिपादित करने का प्रयास किया गया है।

ये कथाएँ भारत में कम्प्यूटर–विज्ञान की शिक्षा और अनुसन्धान के क्षेत्र में अग्रणी प्रोफेसर वी. राजारमन द्वारा संकलित की गई हैं, जिन्होंने वर्ष 1955 में कम्प्यूटर एवं तद्विषयक क्षेत्र में प्रवेश किया था। इस पुस्तक में वर्णित अधिकांश कथाएँ उनकी अनुभव–स्मृतियाँ हैं। प्रत्येक कथा अपने आप में सम्पूर्ण है और पाठक अपनी रुचि के अनुसार कोई भी अंश पढ़ सकते हैं। पुस्तक की भाषा सरल है, अर्थात् इसमें किसी भी शब्दजाल का प्रयोग नहीं किया गया है। विद्यालय में माध्यमिक शिक्षा प्राप्त कोई भी व्यक्ति इस पुस्तक के प्रतिपाद्य को सरल एवं सहज रूप में समझ सकता है।

प्रमुख विशेषताएँ

- यह ग्रन्थ आधुनिक कम्प्यूटिंग के इतिहास को 72 कहानियों की शृंखला के रूप में प्रस्तुत करता है।
- प्रत्येक कहानी कम्प्यूटिंग के इतिहास में एक महत्त्वपूर्ण घटना पर आधारित है।
- प्रत्येक कथा में किसी महत्त्वपूर्ण आविष्कार और आविष्कार. कों का वर्णन किया गया है।
- प्रत्येक कथा अपने आप में सम्पूर्ण है और इसे किसी भी क्रम में पढ़ा जा सकता है।
- यह पुस्तक माध्यमिक शिक्षा प्राप्त सामान्य पाठक के लिए उपयुक्त है।

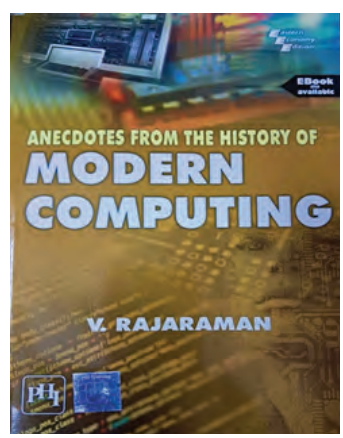

पुस्तक के लेखक वी. राजारमन, पीएच.डी. (विस्कॉन्सिन), इन्डियन इन्स्टीच्यूट आफ साइन्स, बैंगलोर के सुपरकम्प्यूटर शिक्षा एवं अनुसन्धान केन्द्र में एमेरिटस प्रोफेसर के रूप में कार्यरत हैं। इससे पूर्व, प्रो. राजारमन आईआईटी, कानपुर में कम्प्यूटर विज्ञान और इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग के प्रोफेसर (1963–1982), इन्डियन इन्स्टीच्यूट आफ साइन्स, बैंगलोर में कम्प्यूटर विज्ञान के प्रोफेसर और सुपरकम्प्यूटर शिक्षा एवं अनुसन्धान केन्द्र के अध्यक्ष (1982–1994), और जवाहरलाल नेहरू उन्नत वैज्ञानिक अनुसन्धान केन्द्र में आईबीएम सूचना प्रौद्योगिकी के प्रोफेसर (1994–2001) के रूप में कार्य कर चुके हैं। वे वर्ष 1998 में पद्मभूषण पुरस्कार से, 1976 में शान्ति स्वरूप भटनागर पुरस्कार, यूजीसी द्वारा होमी भाभा पुरस्कार, ओम प्रकाश भसीन पुरस्कार, कम्प्यूटर इंजीनियरिंग शिक्षण में उत्कृष्टता के लिए आईएसटीई पुरस्कार, रुस्तम चोकसी पुरस्कार, भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी द्वारा जहीर पदक से सम्मानित हैं। उन्होंने आईआईटी, कानपुर और इण्डियन इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग साइंस एण्ड टेक्नोलॉजी, सिबपुर से डीएससी (एच.सी.) की डिग्री प्राप्त की है। वे इण्डियन एकेडमी ऑफ साइंसेज, इण्डियन नेशनल साइंस एकेडमी, नेशनल एकेडमी ऑफ साइंसेज, इण्डियन नेशनल एकेडमी ऑफ इंजीनियरिंग और कम्प्यूटर सोसाइटी ऑफ इण्डिया के फेलो भी हैं। अनेक सुप्रतिष्ठित और अत्यधिक सफल कम्प्यूटर सम्बन्धी पुस्तकों के लेखक, प्रो. राजारमन के प्रतिष्ठित राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं में अनेक शोधपत्र प्रकाशित हुए हैं।

आईएसबीएनः978-81-39364-43-5